8. पैसा एवं बिन पैसों का लेन देन

लेन देन का सिलसिला चला आ रहा है। इसके कई तरीके और रीति रिवाज़ हैं। तुम कोई एक उदाहरण दो जहां लेन-देन बिना पैसों के होता है?

ज्वार के बदले आम

बिन पैसों के लेन देन, अपने समाज से कुछ उदाहरण

तुम्हारे यहां ज़्यादातर चीज़ों का लेन देन पैसे से ही होता होगा। पर कुछ ऐसी वस्तुएं भी होंगी जिन का लेन-देन पैसों के बिना होता है। जैसे कि इस चित्र मे देख सकते हो, मोहन कुछ ज्वार लेकर धीरज काका के पास आम खरीदने पहुंचा। काका ने ज्वार की दो बराबर ढेरियां बनाईं। एक ढेरी को तराजू पर रखा और उतने ही आम तौल दिए। आम लेकर मोहन घर आ गया और काका ने दोनो ज्वार की ढेरियां रख लीं। इस प्रकार अनाज के माध्यम से लेन देन हुआ। यहां हिसाब था - 'अनाज से आधा'। और भी कई तरह के हिसाब चलते हैं - जैसे "अनाज बराबर," या "लाभ काट बराबर"।

गांव के लोहार से बक्खर का फाल जुड़वा कर और पहिए पर लोहे की चादर चढ़वा कर लोग ले जाते हैं। तब लोहार को पैसे नहीं चुकाते। हर फसल पर बंधा बंधाया अनाज लोहार को देते हैं। कितना देना है- इसका रिवाज़ तय है। इस रिवाज़ के सहारे सालों से लेन-देन चला आ रहा है।

कुम्हार को हाथी के लिए कपड़ा और अनाज दिया जा रहा है

किसके बदले कितना दिया जाएगा, इस बात के रिवाज़ का एक और उदाहरण पढ़ो। बिलासपुर के आदिवासियों के यहां शादी में हाथी पूजा होती है। पूजा के लिए यह हाथी मटकों और सकारों (बड़े दियों) से बनाया जाता है। चित्र में देखो यह प्यारा सा हाथी कैसे बना है।

कुम्हार पूजा का हाथी बना कर तैयार कर चुका है। उसे बदले में क्या मिलेगा? अनाज और कपड़ा। पर कितना मिलेगा?

हाथी की पीठ में छेद होता है। शादी वाले घर के लोग हाथी की पीठ वाले घड़े में जितना धान आए उतना भर देते हैं। और हाथी को पूरी तरह एक नए कपड़े से ढंक देते हैं। यह धान और कपड़ा कुम्हार की मेहनत का भुगतान है। जितना लंबा चौड़ा हाथी उतना लंबा चौड़ा कपड़ा। भुगतान इतना होगा- यह एक रिवाज़ से तय हुआ है।

क्या तुमने लेन देन के ऐसे नियम सुने हैं? क्या कभी इस तरह अनाज के बदले कोई चीज़ खरीदी है? या मेहनत के बदले अनाज लिया है? चर्चा करो।

किस हिसाब से ऐसा लेन देन किया? उन उदाहरणों की सूची बनाओ।

बिन पैसों का लेन-देन, दूसरे समाज के उदाहरण

बिना पैसों का लेन देन सिर्फ हमारे समाज में नहीं होता। इसके उदाहरण सभी समाजों में पाये जाते हैं। रूस के उत्तरी-पूर्वी प्रदेश साईबेरिया के कुछ कबीलों और अलास्का के लोगों के बीच में एक अनोखे तरीके से व्यापार होता है। (नीचे दिए गए चित्रों को देखो)

आमतौर से इन लोगों के बीच दुश्मनी रहती है। इसलिए उन्हें डर रहता है कि कहीं मुलाकात हो गई तो झड़प न हो जाए। पर दोनों को एक दूसरे से आवश्यक सामग्री मिल जाती है।

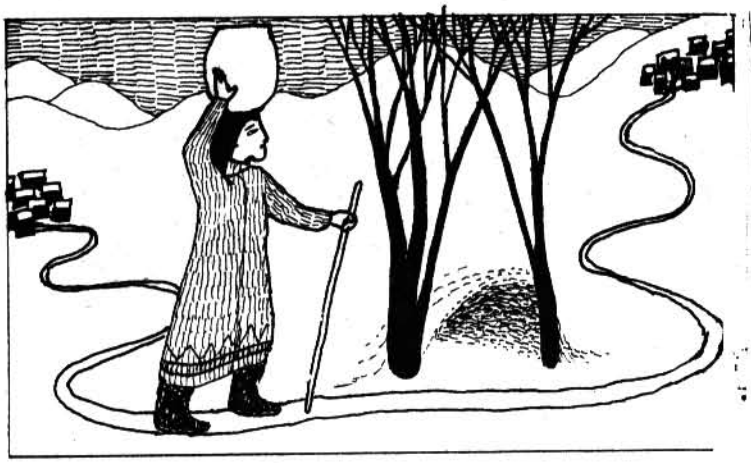

बर्फीली पगडंडी पर एक महिला मटका लेकर आ रही है। मटके में कई चीज़ें भरी हैं।

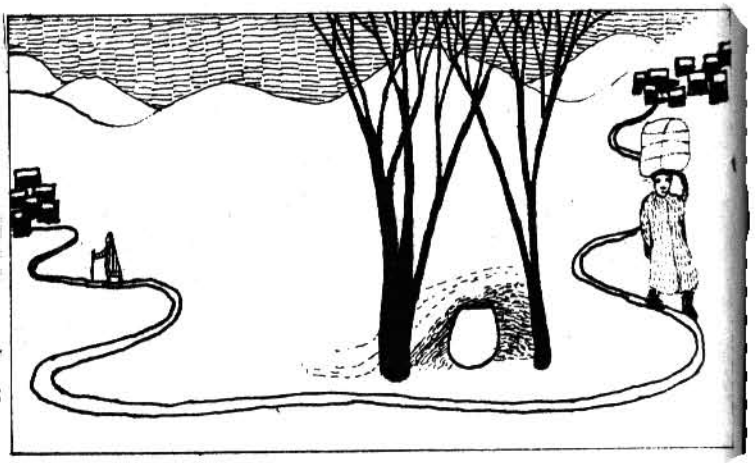

वह निश्चित जगह पर मटका रखकर लौट जाती है - दूसरे गांव से एक आदमी पोटली लेकर आ रहा है।

वह अपनी पोटली रख देता है और मटका लेकर गांव लौट जाता है।

दूसरे दिन पहले गांव की महिला पोटली ले जाती है।

इस तरह इन दोनों गांवों के बीच लेन-देन हो जाता है। हमारा दूसरा उदाहरण है अफ्रीका के गांवों का। पहले उदाहरण में लेन देन दो गाँवों के बीच था। अब हम ऐसे तरीके की बात करेंगे जहां लेन देन कई गांवों के बीच होता है।

एक गांव बसा है नदी के एक तरफ, पहाड़ों की तलहटी में। इन लोगों को शिकार मिल जाता है। वे मांस को धुंआ लगा कर रख लेते हैं। ऐसा मांस यदि बच जाए तो वे नदी के तट पर स्थित एक गांव से मांस के बदले में कुछ शकरकन्द ले आते हैं। यह शकरकन्द ये दूसरे गांव के लोगों ने स्वयं नहीं उगाए। नदी के दूसरे तट पर एक गांव है जहां से इन लोगों ने शकरकन्द लिये। इन गांव वालों को शकरकन्द के बदले में उन्होंने दूसरी चीज़ें दीं जैसे तरबूज़, केला, पपीता आदि। इस तरीके से कई गांवों के बीच लेन देन हो जाता है। जो कुछ भी एक गांव के पास ज़्यादा होता है, वह दूसरे गांव से बदली कर लेते। इस तरह एक से दूसरे, दूसरे से तीसरे, तीसरे से चौथे ..... कई गांवों के बीच वस्तुओं का लेन-देन हो जाता है।

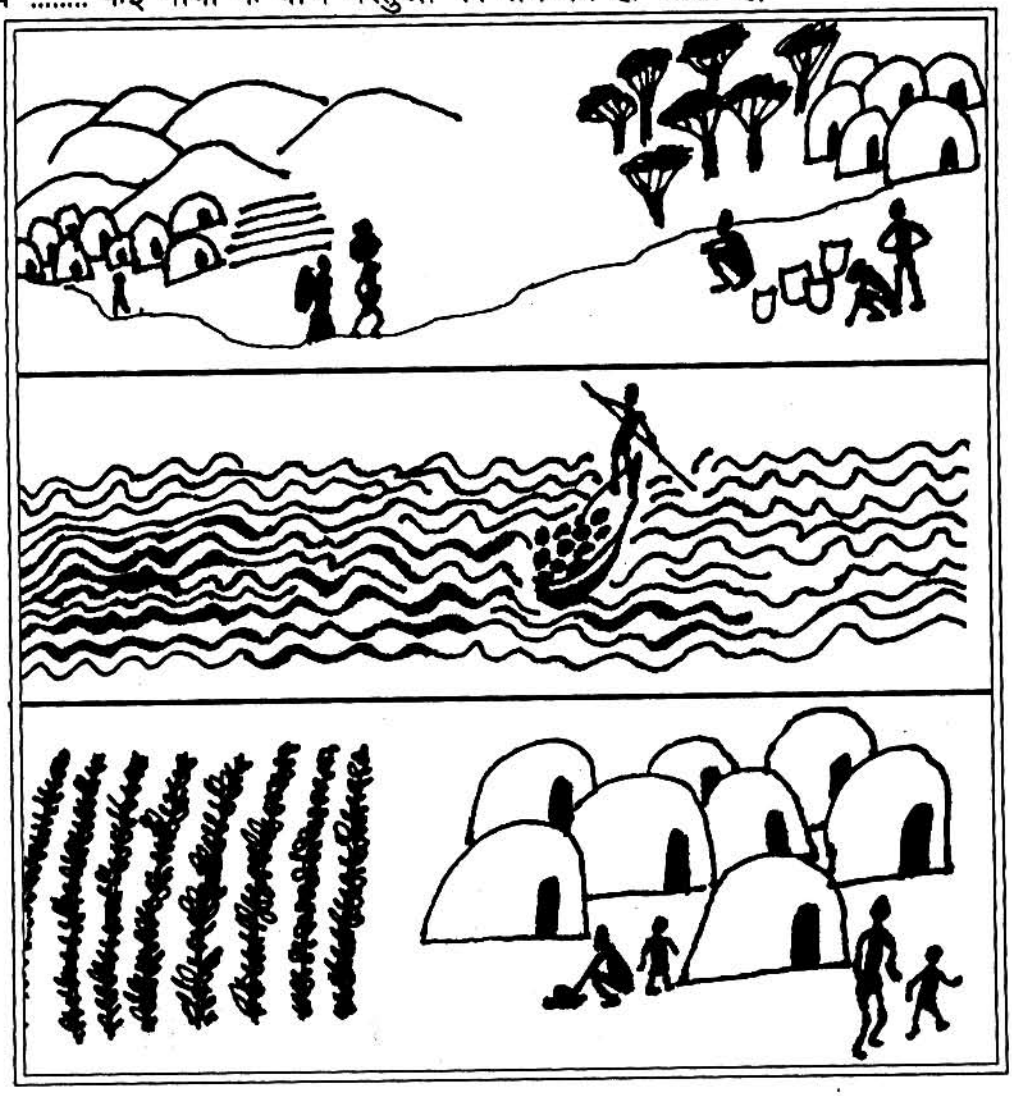

लेन देन की समस्याएं

कितने मांस के बदले में कितना शकरकन्द मिलेगा, कितने शकरकन्द के बदले में कितने केले मिलेंगे- ये बातें तीनों गावों के लोगों ने किसी तरह तय करके लेन देन का एक रिवाज़ बना लिया है। पर, लेन देन का रिवाज़ तय होने से पहले, चीज़ों के मोल को लेकर खींचा तानी हो सकती है। जैसे यहां देखो- एक मटका बेचने वाले और एक कपड़ा बेचने वाले के बीच बहस हो रही है!

बर्तन और कपड़ा बेचने वाले के बीच क्या सौदा तय हुआ होगा? चित्र को पूरा करते हुए उत्तर दो।

पैसे के माध्यम से लेन-देन

कुछ समस्याओं को सुलझाना मुश्किल हो जाता है। नीचे दिए चित्र मे देख सकते हो कि टोकरी भर अनाज और एक गाय को लेकर कैसे लोग उलझ रहे हैं। गाय तो आधे में काटी नहीं जा सकती। कैसे सुलझेगी यह समस्या? ..... चलो एक नाटक पढ़कर देखें।

चार व्यक्ति नाटक करते हैं। नाटक के पात्र हैं - रवीन्द्र, गजराज, दिनेश और 'पैसे का दूत'।

नाटक - "पैसे का दूत आया"

रवीन्द्र एक बकरी खींचता हुआ (झूठमूठ की) दरवाज़े से अन्दर आता है और ज़ोर से कहता है - "गुड़ है? गुड़ है? बकरी के बदले गुड़?" कहकर बैठ जाता है।

तभी गजराज आता है। दरवाज़े से ही कहता है - "अरे दादा! यह बकरी तो मुझे बेच दो।" रवीन्द्र उसके पास जाकर कहता है - "गुड़ है? मुझे बकरी के बदले में गुड़ चाहिए।"

गज़राज - "तुम तो यह बटलोई ले लो। शादी-ब्याह में काम आएगी।"

रवीन्द्र - "नहीं दादा। मोड़ा-मोड़ी की शादी तो हो गई। मैं तो गुड़ ही लूंगा।"

तभी दिनेश आता है और दरवाजे से ही कहता है - "बटलोई है? गुड़ ले जाओ।"

रवीन्द्र उसके पास जाता है। कहता है - "मुझे गुड़ बेच दो और बदले में बकरी ले लो।"

दिनेश ने कहा - "मुझे बकरी नहीं चाहिए, बटलोई चाहिए।"

दिनेश अब गजराज के पास जाता है और कहता है, "मुझे बटलोई बेच दो और गुड़ ले लो।"

गजराज कहता है- "मुझे तो बकरी चाहिए गुड़ नहीं। मैं बकरी के बदले में बटलोई दूंगा।"

	रवीन्द्र	गजराज	दिनेश
खरीदना चाहता है	गुड़	बकरी	बटलोई
बेचना चाहता है	बकरी	बटलोई	गुड़

इस प्रकार हम देखते हैं कि रवीन्द्र, गजराज और दिनेश आपस में सौदा नहीं कर पा रहे हैं, वहां बहुत शोर होता है। कुछ समझ में नहीं आता।

ऊपर दी गई तालिका को देखकर समझाओ कि कोई भी दो व्यक्तियों के बीच सौदा क्यों नहीं हो पा रहा है?

तभी एक व्यक्ति आता है और कहता है - "रुको। सब शांति से बैठ जाओ।" सब उसके

सामने बैठ जाते हैं। वह व्यक्ति कहता है - "मैं हूं पैसे का दूत। मेरे साथ कोई भी सौदा कर सकता है। ये हैं मेरे सिक्के।"

तीनों बोलते हैं, - "हम सिक्कों का क्या करेंगे? हमें तो अपनी ज़रूरत का सामान चाहिए। पैसे का दूत - "आप शांति रखिए, आपको सामान भी मिलेगा।"

अब रवीन्द्र उसके पास गया। उसने बकरी बेच दी और सिक्के लेकर बैठ गया। फिर गजराज गया, उसने बटलोई दे दी और सिक्के ले लिए। इसके बाद दिनेश गया और उसने गुड़ बेचकर सिक्के प्राप्त कर लिए। अब पैसे के दूत ने रवीन्द्र को बुलाया और उससे सिक्के लेकर उसे गुड़ दे दिया। इसी प्रकार गजराज को बकरी देकर उससे सिक्के ले लिए और दिनेश को सिक्कों के बदले बटलोई दे दी। इस प्रकार सभी को उनकी ज़रूरत का सामान प्राप्त हो गया। सिक्के घूमफिर कर पैसे के दूत के पास आ गए।

इस तरह हम देखते हैं कि पहले जो सौदा नहीं हो पा रहा था, वह सिक्कों के माध्यम से आसान हो गया। जब लेन-देन करने वालों ने यह मान लिया कि वे लेन-देन किसी माध्यम से करेंगे तो बड़ी आसानी हो गई। यही कारण है कि लेन-देन के लिए **माध्यम** की ज़रूरत होती है। आज कल पैसा वह माध्यम है। लेकिन बहुत पुराने समय में कौड़ियों के माध्यम से या अनाज या सोने आदि के माध्यम से भी लेन-देन हुआ करता था।

बिन पैसे का लेन-देन आज भी होता है, पर पहले कि तुलना में कम हो गया है। पैसे का उपयोग सभी जगह है। इस पैसे के कई रूप हैं - नोट, सिक्के, बैंक का खाता। लेन-देन को सहज और आसान करने के लिए पैसे के नए-नए रूप बनाए जाते हैं। अलगे वर्ष तुम बैंक के काम-काज के बारे में पढ़ोगे कि बैंक के माध्यम से लेन-देन में क्या सहूलियत होती है।

अभ्यास के प्रश्न

1. बिन पैसों के लेन-देन में 'भाव' कैसे तय होता है?
2. पृष्ठ 233 पर बने चित्रों और पृष्ठ 234 पर बने चित्रों की तुलना करते हुए बताओ कि इनमें क्या अंतर है?
3. पैसे के माध्यम से, किस प्रकार लेन-देन में सहूलियत होती है? समझाओ।
4. मान लो कहीं पर लेन-देन का कोई माध्यम नहीं है और लोग किसी चीज़ को लेन-देन का माध्यम बनाना चाहते हैं। किसी ने सुझाव दिया इमली के बीज और दूसरे ने कहा चाँदी के सिक्के। क्या चुना जाना चाहिए? कारण सहित समझाओ।
5. एक मज़दूर परिवार ने कहा- "हम चाहते हैं कि हमें काम के बदले में पैसे की जगह अनाज ही मिले। इससे हमें नुक्सान नहीं होगा।" तुम सोचकर बताओ कि वे बिन पैसे के लेन-देन में सुरक्षित क्यों महसूस कर रहे हैं?